

नीहार

महादेवी वर्मा

साहित्य भवन लिमिटेड

इलाहाबाद

चतुर्थीवृत्ति : सन् १९५५ ई०

141613
तीन रूपं

814-H
827

मुद्रक : राम आसरे ककड, हिन्दी साहित्य प्रेस, इलाहाबाद



महादेवी

परिचय

कहते हैं, इस ग्रंथ की अधिकांश कवितायें
कैसे कहते हैं? उसे छायावाद कहना
ह वाद प्रस्त विषय है। स्वयं छायावादी-
निरिचत नहीं कर सके, कि वे अपनी नूतन
छायावाद कहें अथवा रहस्यवाद। इस
इतनी विस्तृत हो गई है कि उन सब का
रहस्यवाद में नहीं हो सकता। अतएव
कहने लगे हैं, किन्तु यह संज्ञा अति-व्याप्ति
उत्पन्न (Mysticism) का यथार्थ-अनुवाद
है, छायावाद शब्द में उसकी छाया दिखलाई
यवाद में अस्पष्टता, अपरिच्छिन्नता और—सर्व
फलकती है, वह चमत्कारक होकर अचिन्तनीय
त नहीं पाई जाती। वह स्निग्ध, मनोरम,
तना अचिन्तनीय नहीं, शायद इसीलिये उस
स्वीकृति की मुहर लग गई है। छायावाद
और अपने उद्देश की पूर्ति भी कर रहा है।
विषय में अधिक इदं कुतः की आवश्यकता
विषय के लिये जब कोई शब्द रूढ़ि हो जाता
अपेक्षित आवश्यकता के लिये स्वीकृत समझा
क्या? संसार में अधिकांश नामकरण इसी

आजकल छायावाद की कवितायें इस अधि-
युवक-दल उसकी ओर इतना आकृष्ट है कि
छाया-वाद-युग कह सकते हैं। फिर भी छाया-
वाद-अवस्था में हैं, उद्गम से बाहर निकलती
के समान उनमें वेग है, प्रवाह है, उल्लास
वैखिल्य धीरता नहीं, वह स्थान-स्थान पर

नरंगकुल और आविल भी है। ऐसा होता स्वाभाविक है, काल पाकर उनको सतधरातल भी मिलेगा। और उस समय वे मंजु-मंथर-गामिनी और यशेच्छस्वच्छतामयी एवं सरस होंगी। कवि कार्य सुगम नहीं, वह अगम्य है, वह सर्वथा निर्दोष नहीं हो सकता। जब महा-कवियों में भी भ्रम, प्रमाद, और वृष्टियाँ पाई जाती हैं, तो उस पर बात-बात में उँगली उठाना क्या उचित होगा, जिसने अभी कविता क्षेत्र में पदार्पण किया है। प्रेम में दोष प्रज्ञान के लिये किसी को सतर्क करना अबांछनीय नहीं, किन्तु ऐसे अवसरों पर सच्चिका-प्रवृत्ति से काम लेना संगत नहीं। थोड़े समय में भी कल्पय-द्यायावादी कवियों ने हिन्दी-संसार में कीर्ति अर्जन की है, और उनमें पर्याप्त-भावुकता का विकास देखा गया है। उन्होंने अपने गहन पथ को सरल बनाया है, और कोमल-कान्त-पदावली पर अधिकार करके बड़ी भावमयी कविनायों की हैं। उन्हीं में से एक श्रीमती महादेवी वर्मा कवयित्री भी हैं।

यह ग्रन्थ उनका आदिम ग्रन्थ है फिर भी इसमें उनकी प्रतिभा का विलक्षण विकास देखा जाता है। ग्रन्थ सर्वथा निर्दोष नहीं, किन्तु इसमें अनेक इतनी सजीव और सुन्दर पंक्तियाँ हैं, कि उनके मधुर प्रवाह में उधर दृष्टि जाती ही नहीं। प्रफुल्ल-पाटल प्रसून में काँटे होते हैं, हों, किन्तु उसकी प्रफुल्लता और मनोरंजकता ही सुगंधकारिता की सम्पत्ति है। ऐसा कहकर मैं नियतन की अवहेलना नहीं करता हूँ—सहृदयता का नेत्रोन्मिलन कर रहा हूँ। कहा जा सकता है, एक स्त्री का उत्साह बर्द्धन करने के लिए बाँधे कहीं गईं। मैं कहूँगा यह विचार समीचीन नहीं; ऐसा कर्ना स्त्री जाति की सर्वतोमुखी प्रतिभा को लोचिन करना है। वास्तव में बात यह है कि ग्रन्थ की भावुकता और मार्मिकता उल्लेखनीय है, उसका कोमल शब्द-विन्यास भी अत्यंत आकर्षक नहीं।

मैं श्रीमती महादेवी वर्मा का हिन्दी-साहित्य क्षेत्र में सादर अभिनन्दन करता हूँ, और उम्मे यह वित्तय भी, कि उनकी हृत्तंत्री के अपूर्व झङ्कार में भारतमाता के कण्ठ की वर्तमान ध्वनि भी श्रुति होनी चाहिये, इससे उनकी कीर्ति उज्वल से उज्वलतर होगी। माता की व्यथाओं के अनुभव करके की मार्मिकता मातृत्व पद की अधिकारिणी को ही यथातथ्य हो सकती है।

काशीधाम
२८-४-३० }

हरिऔध

सूची

	पृष्ठ
विमर्जन—	१
मिथुन	३
अभिव्यक्ति	५
मिटने का खेल	६
संसार	७
अधिकार	८
कौन ?	१०
मेरा राज्य	११
चाह	१४
सुतापन	१५
सन्देह	१७
निर्वाण	१८
समाधि के दीप ने—	१८
अभिमान	२०
उस पार	२२
मेरी माध—	२४
स्वप्न	२६
श्राना—	२८
निश्चय—	२८
कानुरोध—	३१
तब—	३२
सुभार्या फूल	३४
कहाँ ?	३७
उत्तर	३८
फिर एक घर	३८
उतका प्यार—	४१
हाँसू	४३

		पृष्ठ
मेरा एकान्त	...	४४
उनसे	...	४६
मेरा जीवन	...	४७
सूना संदेश	...	५०
प्रतीक्षा	...	५१
विस्मृति	...	५४
अनन्त की ओर	...	५६
स्मारक	...	५७
मील	...	५९
दीर	...	६०
वरदान	...	६२
स्मृति	...	६३
याद	...	६५
नीरव भाषण	...	६६
अनोखी भूल	...	६९
आँसू की माला	...	७१
फूल	...	७४
खोज	...	७६
जो तुम आ जाते एक बार	...	७८
परिचय	...	७९

नीहार

नीहार

विसर्जन—

निशा की, धो देता राकेश
चाँदनी में जब अलकें खोल,
कली से कहता था मधुमास
‘बता दो मधुमदिरा का मोल’;

भटक जाता था पागल वात
धूल में तुहिनकणों के हार;
सिखाने जीवन का सङ्गीत
तभी तुम आये थे इस पार ।

बिछाती थीं सपनों के जाल
तुम्हारी वह करुणा की कोर,
‘गई वह अधरों की मुस्कान
मुझे मधुमय पीड़ा में बोर’;

नीहारं

भूलती थी मैं सीखे राग
विछलते थे कर वारम्बार,
- तुम्हें तब आता था करुणेश !
उन्हीं मेरी भूलों पर प्यार !

गए तब से कितने युग बीत
हुए कितने दीपक निर्वाण !
नहीं पर मैंने पाया सीख
तुम्हारा सा मनमोहन गान ।

× × ×

नहीं अब गाया जाता देव !
थकी अँगुली, हैं ढीले तार
विश्ववीणा में अपनी आज
मिला लो यह अस्फुट झङ्कार !

नीहार

मिलन

रजतकरों की मृदुल तूलिका-
से ले तुहिनविन्दु सुकुमार,
कलियों पर जब आँक रहा था
करुण कथा अपनी संसार;

तरल हृदय की उच्छ्वासें जब
भोले मेष लुटा जाते,
अन्धकार दिन की चोटों पर
अजन वरसाने आते ।

मधु की बूँदों में छलके जब
तारक लोकों के शुचि फूल,
विधुर हृदय की मृदु कम्पन सा
सिहर उठा वह नीरव कूल ;

मूक व्रणय से, मधुर व्यथा से,
स्वप्नलोक के से आह्वान,
वे आये चुपचाप सुनाने
तब मधुमय मुरली की तान ।

नीहार

चल चितवन के दूत सुना
उनके, पल में रहरय की बात,
मेरे निर्निमेष पलकों में
मन्चा गए क्या क्या उत्पात !

जीवन है उन्माद तभी से
निधियां प्राणों के छाले,
मांग रहा है विपुल वेदना-
के मन प्याले पर प्याले !

पीड़ा का साम्राज्य बस गया
उस दिन दूर क्षितिज के पार,
मिटना था निर्वाण जहां
नीरव रोदन था पहरेदार ।
× × ×

कैसे कहती हो सपना है
अलि ! उस मूक मिलन की बात ?
भरे हुए अबतक फूलों में
मेरे अँसू उनके हास !

नीहार

अतिथि से

वनवाला के गीतों सा
निर्जन में बिखरा है मधुमास,
इन कुजों में खोज रहा है
सूना कोना मन्द वतास ।

नीरव नभ के नयनों पर
हिलती हैं रजनी की अलकें,
जाने किसका पंथ देखतीं
बिछकर फूलों की पलकें !

मधुर चाँदनी धो जाती है
खाली कलियों के प्याले,
बिखरे से हैं तार आज
मेरी वीणा के मतवाले :

पहली सी झङ्कार नहीं है
और नहीं वह मादक राग,
अतिथि ! किन्तु सुनते जाओ
दूटे तारों का करुण विहाग !

१९२२ मई

नीहार

मिटने का खेल

• मैं अनन्त पथ में लिखती जो
संमित सपनों की बातें,
उनको कभी न धो पायेगी
अपने आँसू से रातें ! -

उड़ उड़ कर जो धूल करेगी
रेषों का नश में अभिषेक,
अमिट रहेगी उसके अञ्जल—
में मेरी पीड़ा की रेख ।

• तारों में प्रतिबिम्बित हो
मृकायेगी अनन्त आँसू,
होकर सीमाहीन, सून्य में
मंडगायेगी अभिलाषों । -

धीरुा होगी मृक वजाने—
वाला होगा अन्तर्धान,
विस्मृति के चरणों पर आकर
लोटेंगे सौ सौ निर्वाण !

• जब असीम से हो जायेगा
मेरी लघु सीमा का मेल,
देखोगे तुम देव ! अमरत
खेलेगी मिटने का खेल ! -

१९२६ मई

नीहार

संसार

निश्चानों का पीड़ा, निशा का
वन जाता जब शयनागार,
लुट जाने अभिराम छिप
: मुक्तावृत्तियों के वन्दनवार,

तब बुझते तारों के नीरव नयनों का यह हाहाकार,
आँसू से लिख लिख जाता है 'कितना अस्थिर है संसार' !

हँस देता जब प्रातः सुनहरे
अञ्जल में विश्रवा रोली,
लहरों की विद्युत्तन पर जब
मचली पड़ती किरणें भोली,

तब कलियाँ चुपचाप उठाकर पल्लव के धँधट सुकुमार,
छलकी पलकों से कहती हैं 'कितना मादक है संसार' !

नीहार

देकर सौरभ दान पवन से
कहते जब मुरझाये फूल,
'जिसके पथ में बिछे वही
क्यों भरता इन आँखों में धूल ?

'अब इनमें क्या सार' मधुर जब गाती भौरों की गुञ्जार,
ममर का रोदन कहता है 'कितना निधुर है संसार !'

स्वर्ण वर्षा से दिन लिख जाता
जब अपने जीवन की हार,
गोधूली, नभ के आँगन में
देती अगणित दीपक बार,

हँसकर तब उस पार तिमिर का कहता बड़ बड़ पारावार,
'वीते युग, पर बना हुआ है अब तक मतवाला संसार !'

स्वप्नलोक के फूलों से कर
अपने जीवन का निर्माण,
'अमर हमारा राज्य' सोचते
हैं जब मेरे पागल प्राण,

आकर तब अज्ञात देश से जाने किसकी मृदु झङ्कार,
गा जाती है करुण स्वरों में 'कितना पागल है संसार !'

१९२६ई

नीहार

अधिकार

वे मुस्काते फूल, नहीं—
जिनको आता है मुरझाना,
वे तारों के दीप, नहीं—
जिनको भाता है बुझ जाना ;

वे नीलम के मेघ, नहीं—
जिनको है धुल जाने की चाह,
वह अनन्त ऋतुराज, नहीं—
जिसने देखी जाने की राह ।

वे सूने से नयन, नहीं—
जिनमें बनते आँसू-मोती,
वह प्राणों की सेज, नहीं—
जिसमें बेसुध पीड़ा सोती ;

ऐसा तेरा लोक, वेदना
नहीं, नहीं जिसमें अवसाद,
जलना जाना नहीं, नहीं—
जिसने जाना मिटने का स्वाद !

× × ×

क्या अमरों का लोक मिलेगा
तेरी करुणा का उपहार ?
रहने दो हे देव ! अरे
यह मेरा मिटने का अधिकार !

नीहार

कौन ?

दुलकते आँसू सा सुकुमार
बिखरते सपनों सा अज्ञात,
चुरा कर ऊषा का सिन्दूर
मुस्कराया जब मेरा प्रात,

छिपा कर लाली में चुपचाप
सुनहला प्याला लाया कौन ?

× × ×
हँस उठे छूकर टूटे तार
प्राण में मँडराया उन्माद,
व्यथा मीठी ले प्यारी प्यास
सो गया बेसुध अन्तर्नाद,

घँट में थी साक्री की साध
मुना फिर फिर जाता है कौन ?

१९२६ जुलाई

नीहार

मेरा राज्य

रजनी ओढ़े जाती थी
झिलमिल तारों की जाली,
उसके बिखरे वैभव पर
जब रोती थी उजियाली :

शशि को छूने मचली सी
लहरों का कर कर चुम्बन,
बेसुध तम की छाया का
तटनी करती आलिङ्गन ।

अपनी जब करुण कहानी
कह जाता है मलयानिल,
आँसू से भर जाता जब—
सूखा अवनती का अञ्जल ;

नीहार

✓ पल्लव के डाल हिंडोले
सौरभ सोता कलियों में,
छिप छिप किरणें आती जब
मधु से सींची गलियों में । ✓

आँखों में रात बिता जब
विधु ने पीला मुख फेरा,
आया फिर चित्र बनाने
प्राची में प्रात चितेरा ;

कन कन में जब छाई थी
वह नवयौवन की लाली,
मैं निर्धन तब आई ले,
सपनों से भर कर डाली ।

जिन चरणों की नखआभा—
ने हीरकजाल लजाये,
उन पर मैंने धुँधले से
आँसू दो चार चढ़ाये !

इन ललचाई पलकों पर
पहरा जब था व्रीड़ा का,
साम्राज्य मुझे दे डाला
उस चितवन ने पीड़ा का !!

नीहार

उस सोने के सपने को
देखे कितने युग बीते !
आँखों के कोष हुए हैं
मोती बरसा कर रोते :

अपने इस सुनेपन की
मैं हूँ रानी मतवाली,
प्राणों का दीप जला कर
करती रहती दीवाली ।

मेरी आँहें सोती हैं
इन ओटों की ओटों में,
मेरा सर्वस्व छिपा है
इन दीवानी चोटों में !!

चिन्ता क्या है, हे निर्मम !
बुझ जाये दीपक मेरा ;
हो जायेगा तेरा हाँ
पीड़ा का राज्य अंधेरा !

नीहार

चाह

चाहता है यह पागल प्यार,
अनोखा एक नया संसार !

कलियों के उच्छ्वास शून्य में तानें एक वितान,
तुहिनकराओं पर मृदु कम्पन से सेज बिछा दें गान;

जहाँ सपने हों पहरेदार,
अनोखा एक नया संसार !

करते हों आलोक जहाँ बुझ बुझ कर कोमल प्राण,
जलने में विश्राम जहां मिटने में हों निर्वाण ;

वेदना मधुमदिरा की धार,
अनोखा एक नया संसार !

मिल जाव उस पार क्षितिज के सीमा सीमाहीन,
गर्विले नक्षत्र धरा पर लोट होकर दीन !

उदधि हो नभ का शयनागार,
अनोखा एक नया संसार !

जीवन की अनुभूति तुला पर अरमानों से तोल,
यह अबोध मन मृक व्यथा से ले पागलपन मोल !

करें दग आँसू का व्यापार,
अनोखा एक नया संसार !

१९२६ जुलाई